بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहअलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 04.08.2017 मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

जलसा सालाना के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह भी है कि ऐसा भाईचारा तथा शुक्रगुज़ारी की भावनाएँ एक दूसरे के लिए पैदा हों जो उदारहण हों
जलसा सालाना बर्तानिया के सफल आयोजन तथा जलसे में शामिल होने वाले आदरणीय मेहमानों की ईमान वर्धक अभिव्यक्ति

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला का बड़ा फ़ज़्ल और एहसान है कि बर्तानिया की अहमदिया जमाअत का जलसा सालाना पिछले सप्ताह कुशलता पूर्वक आयोजित हुआ। जलसा सालाना के तीन दिनों में हमने अल्लाह तआला की कृपाओं तथा बरकतों के दृश्य देखे तथा प्रत्येक उपस्थित व्यक्ति ने अनुभव किया कि अल्लाह तआला की सहायता एवं कृपा हर पल नाज़िल हो रही थी। अतः इस बात पर हम अल्लाह तआला का जितना भी शुक्र अदा करें कम है। यह आभार कार्यकर्ताओं की ओर से भी व्यक्त होना चाहिए तथा शामिल होने वालों को भी आभारी होना चाहिए ताकि वे भी अधिक से अधिक अल्लाह तआला की कृपाओं को ग्रहण करने वाले बनें, और जो सेवा पर नियुक्त थे, कारकुन थे उनका भी, उन लोगों को जो शामिल हुए आभारी होना चाहिए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- जलसा सालाना के उददेश्यों में से एक लक्ष्य यह भी है कि ऐसा बन्धुत्व तथा आभार की भावनाएँ एक दूसरे के प्रति पैदा हों जो उदाहरण हों। अल्लाह तआला की कृपा से यही मुहब्बत, प्यार और बन्धुत्व की भावनाएँ हैं जिनकी अभिव्यक्ति जब हम अपनों और ग़ैरों से कर रहे हों तो यह चीज़ हर आने वाले मेहमान को प्रभावित कर रही होती है, ज्ञान वर्धक और दीन के प्रोग्रामों के अतिरिक्त प्रत्येक अहमदी का व्यवहारिक नमूना आने वाले अतिथियों को अत्यधिक प्रभावित कर रहा होता है जिसको वे अभिव्यक्त करते हैं कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का नमूना हमें जलसे में नज़र आया जिससे हम बड़े प्रभावित हुए। आने वाले ग़ैर मेहमान जो हैं, वे अपनी भानाओं को अभिव्यक्त भी करते हैं। इस समय मैं कुछ अभिव्यक्तियाँ पेश करूंगा जो उन्होंने इस वातावरण को देख कर बयान किए तथा तुरन्त इस बात की अभिव्यक्ति की, कि यदि यह इस्लाम की शिक्षा है तो इस शिक्षा के फैलने की दुनिया में आवश्यकता है।

बेनिन से पूर्व विदेश मन्त्रि तथा राष्ट्रीय सलाहकार मरयम बोनी जिलयालो साहिबा कहती हैं कि मुझे इस जलसे के माध्यम से अहमदिया जमाअत को गहराई से समझने का अवसर मिला। मैं जलसे की व्यवस्था से

बड़ी प्रभावित हूँ, कार्यकर्ताओं का प्रबन्धकीय स्तर बड़ा उच्च श्रेणी का था, कारकुनों की निष्ठा देखकर मैं चकित रह गई। मैंने प्रबन्ध की दृष्टि से हर प्रकार से निरीक्षण किया, कहती हैं- किन्तु इतने बड़े जलसे में कोई त्रूटि दिखाई नहीं दी। कहती हैं कि जब मैं कार्यकर्ताओं की ओर देखती तो अनुभव करती कि क्या छोटा और क्या बड़ा, बूढ़ा जवान पुरुष स्त्री अर्थात प्रत्येक वर्ग के लोग दूसरों को आराम पहुंचाने के लिए अग्रसर थे। हर कोई अपना आराम भुलाकर दूसरों को सुविधा एंव सरलता पहुंचाने के लिए तत्पर था। कहती हैं कि वह इस्लाम जो अहमदियत पेश करती है, वही दुनिया को अमन दे सकती है तथा विश्व की समस्याओं का समाधान इसी में है। फिर कहती हैं कि अहमदिया जमाअत के इमाम का जो महिलाओं में सम्बोधन था उसने मेरे विचारों पर अत्यंत प्रभाव छोड़े हैं। अन्य मुस्लिम समुदायों की दृष्टि में महिला की अवस्था एक ग़ुलाम से अधिक नहीं है परन्तु अहमदिया जमाअत के इमाम ने महिलाओं के सम्बोधन में महिलाओं को गुरु घोषित किया है तथा उसके कर्त्तव्यों में आने वाली पीढ़ियों के प्रशिक्षण एवं शिक्षा को शामिल किया है जो विश्व का भविष्य हैं।

फिर गोएटेमाला की राष्ट्रीय लोक सभा की सदस्य एलीन कैलिस ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया कि जलसे में शामिल होना एक अत्यंत अदभुत तथा विचित्र अनुभव था। इस्लाम धर्म और अहमदिया जमाअत के बारे में मेरे विचारों में बड़ा भारी बदलाव आया है। मीडिया ने इस्लाम के विषय में बड़ा ही अनुचित तथा भयानक चित्र बनाया हुआ है कि इस्लाम आतंक और घृणा की शिक्षा देता है किन्तु मैं इस जलसे से इस्लाम की, वास्तविक इस्लाम की शांति पूर्ण तथा सुन्दर शिक्षा की विचार धारा लेकर वापस जा रही हूँ।

इसी प्रकार कोस्टा रीका की नैश्नल यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ैसर सिरीज्योमाया शामिल हुए जलसे में। कहते हैं कि मैंने इस जलसे के माध्यम से इस्लाम का एक नया चित्र देखा है, मुसमानों की एक ऐसी जमाअत देखी है जो परस्पर प्रेम तथा सद्भावना में बेजोड़ है। जो अपने ईमान का क्रियाशील चित्रण करती है। मैं वापस जाकर अपने सहपाठियों तथा विद्यार्थियों को बताऊँगा कि अहमदिया जमाअत इस्लाम की वास्तविक तथा सुन्दर शिक्षाओं को क्रियाशील रंग में पेश करती है तथा जो वास्तव में अपने उद्देश्य के अनुसार कार्यरत है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- ये लोग आने वाले हमारी तबलीग़ का भी माध्यम बन जाते हैं।

फिर कोस्टा रीका की लोक सभा सदस्य के सलाहकार डगलस मोन्टो रोसो साहब कहते हैं कि मैंने जलसा सालाना में अहमदिया जमाअत के इमाम के सम्बोधन बड़े ध्यान पूर्वक सुने, उनके इस उपदेश ने मुझे बड़ा प्रभावित किया कि अपने शत्रुओं को क्षमा करने तथा उनके लिए दुआ करने से दिल घृणा और द्वेष से मुक्त हो जाता है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यह वह शिक्षा है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें दी और कहते हैं कि यही चीज़ है जो विश्व में अमन की स्थापना का साधन हो सकती है और इन सम्बोधनों से मुझे आध्यात्मक रूप से तथा व्यवहारिक रूप से बड़ा लाभ प्राप्त हुआ है तथा इस्लाम की वास्तविक शिक्षाएँ तथा उनका व्यवहारिक रूप इस जलसे में देखने को मिला।

एक करोशियन महिला कैटरीना सालिक साहिबा जलसे में शामिल थीं, कहती हैं कि मैं पहले चर्च में नन थी अब सत्य की खोज में हूँ। कहती हैं- जलसे के वातावरण ने तथा यहाँ पर लगाई गई प्रदर्शनियों तथा जमाअत के विषय में अन्य जानकारी ने मेरे विचारों को प्रकाशमयी कर दिया है। मुझे लगता है कि सम्भवतः शीघ्र ही अब सत्य की खोज की यात्रा पूरी हो जाएगी। कहती हैं कि जमाअत अहमदिया के इमाम के सम्बोधनों ने मेरे मस्तिष्क पर बड़ा भारी प्रभाव छोड़ा है।

करोशिया से एक जोड़ा आया था पिछले साल, बड़ी आयु के हैं इस वर्ष भी शामिल हुए। मुझे उन्होंने भेंट के समय कहा कि पिछले वर्ष हम एक साधारण मुसलमान के रूप में शामिल हुए थे तथा इस साल हम अहमदी मुसलमान के रूप में शामिल हुए हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अनेक गणमान्य अतिथियों के अनुभव बयान फ़रमाए और फ़रमाया- यह जो ग़ैरों पर प्रभाव होता है हमारी जमाअत का, इसको सामान्य दिनों में भी क़ायम रखने का प्रयास करना चाहिए, यह बड़ा भारी दायित्व है प्रत्येक अहमदी का कि केवल कुछ दिनों के लिए दिखावा न हो बल्कि सदा के लिए यह प्रभाव क़ायम करने वाले हों।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- ये कुछ अभिव्यक्तियाँ थीं ग़ैरों की, फ़रमाया- कुछ मुसलमान भी शामिल हुए जो अपने देशों के लीडर थे उनका प्रतिनिधित्व भी कर रहे थे, उनकी एक दो अभिव्यक्तियाँ पेश करता हूँ-

अल-हाज मुहम्मद सलीम साहब हैं उपाध्यक्ष राष्ट्रीय विधान सभा गिनी कनाकरी, कहते हैं- मुझे हज करने का भी सुअवसर मिला है तथा अनेक इस्लामी देशों के धार्मिक प्रोग्रामों में शामिल हो चुका हूँ किन्तु इतने उत्तम और प्रशंसनीय प्रबन्ध मैंने कहीं नहीं देखे तथा यही इस्लाम की वास्तविक आत्मा है जो हमें यहाँ देखने को मिली। आप लोग अपने काम में सबसे आगे हैं और आप ही सही रास्ते पर हैं। कहते हैं- मुझे विश्वास है कि आप लोगों के पीछे ख़ुदा तआला का हाथ है।

सीरालियोन के एक मेम्बर पार्लिमैन्ट अली कलाको साहब कहते हैं कि अहमदियत ही इस्लाम का वास्तविक रूप है। अहमदी मुसलमान अमन के लिए जो प्रयास कर रहे हैं वे प्रशंसा योग्य हैं। आजकल इस्लाम का नाम हर ओर आतंकवाद के साथ जोड़ा जाता है परन्तु अहमदी इस धारणा को अनुचित प्रमाणित कर रहे हैं। जलसे की व्यवस्था अति उत्तम थी, छोटे छोटे बच्चे भी सेवा में लगे हुए थे। यह दृश्य आत्मविभोर था और मेरे विचार में अहमदिया जमाअत का सत्य प्रमाणित करने के लिए यह दृश्य ही पर्याप्त है।

फिर तुर्कमानिस्तान के एक दोस्त अब्दुर्रशीद साहब शामिल हुए। कहते हैं- जिस दिन से लंदन आया हूँ, प्यार और मुहब्बत से घिरा हुआ हूँ जैसे कि अपने वास्तविक माता पिता तथा परिवार के बीच हूँ। कहते हैं- जलसे में शामिल होकर मुझे यह बात समझ आ गई है कि मैंने अपना पूरा जीवन अल्लाह की खोज में व्यतीत किया किन्तु अल्लाह तआला को केवल यहाँ आकर ही पाया। मुझे अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से विश्व व्यापी बैअत के भव्य आयोजन में शामिल होकर बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- कुछ नई बैअत करने वाले जब मुहब्बत प्यार और भाईचारे के दृश्य देखते हैं तो उनके ईमान में और व्यापकता आती है। जमीका से शामिल होने वाली एक नौमुबाए महिला विन्सन विलयम साहिबा कहती हैं कि जलसा सालाना में ख़लीफ़तुल मसीह के सम्बोधन तथा विशेष रूप से विश्व व्यापी बैअत एक बड़ा भावुक अनुभव था। जब मैंने कार्यकर्ताओं को निःस्वार्थ सेवा करते देखा तो मुझे आभास हुआ कि यह एक इलाही जमाअत है तथा ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को सीधे अल्लाह तआला की सहायता एवं समर्थन प्राप्त है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आलमी बैअत का भी ग़ैरों पर प्रभाव पड़ता है। करोशियन पार्लिमैन्ट के मेम्बर असम्बली जलसे में शामिल हुए आलमी बैअत के विषय में उन्होंने बताया कि आलमी बैअत के आयोजन ने मुझे बड़ा प्रभावित किया। मैं ईसाई धर्म की faithly comfirmation के आयोजन में कई बार शामिल

हुआ हूँ परन्तु जो भावनाएँ, श्रद्धा तथा धर्म के प्रति आज्ञापालन का संकल्प अहमदिया जमाअत की विश्व व्यापी बैअत में देखा वह अद्भुत एंव विचित्र अनुभव था जिसको मैं पूरी आयु याद रखूँगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- प्रैस का भी ध्यानाकर्षित हुआ है। जलसे से प्रभावित होकर प्रैस भी अब इस्लाम के बारे में बहुत से उचित समाचार देने पर मजबूर है। बोल योया के नैश्नल न्यूज़ चैनल के एक पत्रकार ने अपनी भानाएँ अभिव्यक्त करते हुए कहा कि पश्चिमी विचार धारा के अनुसार इस्लाम महिलाओं को पीछे रखता है तथा उनका कोई आदर नहीं है परन्तु मैंने यहाँ देखा कि अहमदिया जमाअत के इमाम तो उच्च स्थान प्राप्त करने वाली महिलाओं को इनाम दे रहे हैं तथा प्रत्येक महिला को उसका अलग नाम लेकर पुकारा जा रहा है तो मेरे दिल में इच्छा उत्पन्न हुई कि मैं वापस जाकर अपने अख़बार में इसके विषय में अवश्य लिखूँगा। क्या दुनिया में कभी किसी मुख्या ने केवल महिलाओं को सम्बोधित करके भाषण दिया है, कभी नहीं।

बोल योया के एक पत्रकार कार्लोस जिमी रियास साहब कहते हैं- जिस बात ने मुझे अहमदिया जमाअत के बारे में सबसे अधिक प्रभावित किया, वह अहमदिया जमाअत का अमन की स्थापना के लिए जोश तथा उसके लिए प्रयास हैं। यह एक ऐसा सन्देश है जो आज के दौर में अत्यधिक महत्त्व पूर्ण एवं आवश्यक है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- प्रैस ने भी बड़ी अच्छी कवैज दी है। मीडिया के माध्यम से, जलसा सालाना के विषय में 358 समाचार प्रसारित हुए हैं तथा उनमें अब और अधिक वृद्धि हो रही है। एक अवलोकन के अनुसार समस्त माध्यमों के द्वारा 128 मिलयन से अधिक लोगों तक सन्देश पहुंचा है। अफ्रीक़ा में जलसा सालाना की कवैज हुई। अफ्रीक़ा में एम टी ए अफ्रीक़ा के अतिरिक्त दस चैनल्ज़ पर जलसा सालाना के प्रसारण दिखाए गए जिन पर विभिन्न देशों में 150 से अधिक घन्टों पर आधारित कवैज की।

अल्लाह तआला करे कि हम अपने कर्त्तव्यों का सदैव निर्वाह करने वाले हों और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को ग्रहण करने के लिए सदैव दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देते हुए अपने दायित्व निभाने वाले हों।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने तीन मरहूमों की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ने की घोषणा फ़रमाई। मुकर्रमा साहिबज़ादी ज़किया बेगम साहिबा पत्नि मिर्ज़ा दाऊद अहमद साहब सुपुत्री हज़रत नवाब अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा तथा नवाब अब्दुल्लाह ख़ान साहब। मुकर्रम तारिक मसऊद साहब मुरब्बी-ए-सिलसिला नज़ारत इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया रबवा पुत्र मुकर्रम मसऊद अहमद ताहिर साहब। मुकर्रम शकील अहमद मुनीर साहब पूर्व मिश्नरी इन्चार्ज आस्ट्रेलिया पुत्र मुकर्रम हकीम ख़लील अहमद साहब मूँघेरी।

TOLL FREE NO: 180030102131